प्रेस विज्ञप्ति

आचार्यश्री महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर

अन्तर्मन में जगाएं भक्ति : युवाचार्य महाश्रमण

सरदारशहर, 6 मई 2010।

युवाचार्य महाश्रमण ने श्रीसमवसरण में नित्य प्रवचन के दौरान कहा कि भक्ति अन्तर्मन में जगनी चाहिए। केवल भगवान का नाम लेते हैं पर बुराइयों की कुर्बानी नहीं देते हैं तो भक्ति दिखावा मात्र रह जाती है। जो भगवान के साथ तादात्मय हो जाता है, बुराइयों की कुर्बानी दे देता है तो वह वीर होता है। अन्तर्मन में समर्पण भाव प्राप्त हो जाये तो परम को प्राप्त कर सकते हैं।

उन्होंने श्रोतेन्द्रिय की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कान से अच्छी बातों को भी सुना जा सकता है और बूरी बातों को भी सुना जा सकता है। कान से ज्ञान की बात सुनी जाती है तो कान विभूषित होते हैं। ज्ञान के द्वारा ही आदमी करणीय, हितकर और सुखप्रद क्या है इसको जान सकता है। उन्होंने कहा कि जैन दर्शन के बड़े तत्वों में संवर, निर्जरा और मोक्ष ही ग्रहण करने योग्य है और 6 तत्त्व छोड़ने योग्य है। युवाचार्यवर ने कहा कि साहित्य नहीं होता है तो अज्ञान रूपी अंधकार रह जाता है। साहित्य के ज्ञान को समझने के लिए गुरु की जरूरत होती है। गुरु प्रवचन के द्वारा ज्ञान का विशद रूप समझाते हैं।

शिक्षक प्रशिक्षण शिविर 8 को

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में अणुव्रत समिति सरदारशहर के द्वारा 8 मई को प्रातः 7.30 से 12.30 बजे तक शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दुगड़ गेस्ट हाउस में किया जायेगा। उक्त जानकारी देते हुए समिति के कार्यकारी अध्यक्ष संपतराम सुराणा ने बताया कि इस शिविर में शिक्षकों को जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण दिया जायेगा एवं शिक्षक अणुव्रत, विद्यार्थी अणुव्रत और अणुव्रत परीक्षाओं के बारे में जानकारी प्रदान की जायेगी। उन्होंने कस्बे के प्रत्येक शिक्षक से इस शिविर में सहभागी बनने का आह्वान करते हुए बताया कि इस शिविर में आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण के द्वारा भी विशेष प्रशिक्षण प्राप्त होगा। उन्होंने बताया कि अणुव्रत समिति के द्वारा वर्तमान समस्याओं के सन्दर्भ में सघन अभियान चलाया जायेगा।

शीतत बरड़िया

(मीडिया संयोजक)